Notification No.: COE/Ph.D./ (Notification)/553/2024

Notification Date: 02-02-2024

Research Scholar: Sayed Parwez

Supervisor: Prof. Kahkashan Ahsan Saad

Department: Hindi

Tittle: NAV-UDARWADI DAUR KE HINDI KATHA SAHITYA MEIN ABHIVYAKT SAMPRADAYIKTA KA ALOCHANATMAK ADHYAYAN

शोध-विषय: 'नव-उदारवादी दौर के हिन्दी कथा-साहित्य में अभिव्यक्त साम्प्रदायिकता का आलोचनात्मक अध्ययन'

संक्षिप्त शोध सार

यह शोध प्रबन्ध नवउदारवादी दौर के हिन्दी कथा-साहित्य (कहानी एवं उपन्यास) को आधार बनाकर लिखा गया है। कथा-साहित्य में सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश एवं धार्मिक परिवेश जुड़ा होता है, जिसे कथाकार अपनी संवेदना और यथार्थ एवं कल्पना के साथ प्रस्तुत करता है। नवउदारवाद औपचारिक तौर पर भारत में वर्ष 1991 से विद्यमान है, लेकिन उसकी घुसपैठ वर्ष 1970 के दशक के उत्तरार्ध से मानी जाती है। नवउदारवाद व्यक्ति केन्द्रित न होकर बाजार केन्द्रित व्यवस्था है। उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण (एलपीजी) की नीतियों को देश में लागू किया गया है। कोरपोरेट यानी पूंजीपति अपने ऊपर 'राज्य व्यवस्था' का अंकुश नहीं चाहते हैं। नवउदारवाद, राज्य व्यवस्था से सिर्फ नीतियां बनाने पर जोर देता है, जहां 'राज्य व्यवस्था' यानी सरकार सेवा प्रदाता की भूमिका में न हो। एक बात तो स्पष्ट है कि नवउदारवाद पूरी तरह निजीकरण को बढ़ावा देता है। जहाँ

गलाकाट प्रतियोगिता दिखती है जिसे वर्तमान के सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश में देखा जा सकता है।

इस दौर में 'राज्य व्यवस्था' एक आम व्यक्ति के प्रति विशेष चिंता नहीं रखती है। राज्य व्यवस्था का पहला कार्य ही आम व्यक्ति के लिए लोककल्याण है। परन्तु पूँजीवादी व्यवस्था लोक-कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के विपरीत है। ध्यातव्य है कि इस नीति ने राज्य व्यवस्था के साथ लोगों की सोचने, समझने की शैली को अपने अनुरूप ढालने में सफल हुई है। सार्वजानिक उपक्रम, सरकारी व्यवस्था से मुक्ति की बात सामने आई है, जबकि निजीकरण बढ़ने से एक आम आदमी ज्यादा शोषित और प्रभावित होगा। इस दौर के हिंदी कथा साहित्य में नवउदारवाद की समूची कार्यशैली पूर्णतः परिलक्षित होती है। जिसका अध्ययन इस शोध कार्य में किया गया है।

नवउदारवाद का सत्ता और बाजार के साथ गठबंधन से दिखता है। नब्बे के बाद के हिंदी कथा-साहित्य में धार्मिक पहचान की राजनीति सामने आई है। साथ ही साथ पूंजीवाद, बाजारवाद के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट करती हैं। असगर वजाहत की कहानी 'मुश्किल काम', नमिता सिंह की कहानी-'मूषक', भगवानदास मोरवाल की कहानी 'रंग-अबीर', नासिरा शर्मा की कहानी 'सतघरवा', मीरा कान्त की कहानी-'हाइफन', रूपसिंह चंदेल की कहानी-'हासिम का', अखिलेश की कहानी अंधेरा', चंदन पाण्डेय की कहानी 'भूलना', योगेन्द्र आहूजा की कहानी-'मर्सिया', हरियश राय की कहानी 'आमची मुम्बई', 'महफिल', 'किस मुकाम तक', पंकज सुबीर की कहानी 'इलोई! इलोई लाम सबाख्तानी'। इस दौर की कहानियां धार्मिक द्वेष के साथ उसके उपचार की विधियों से अवगत भी कराती हैं। द्वेष का आधार द्वंद्वात्मक भौतिकवाद नज़र आता है। विभिन्न धर्मों की एक संस्कृति की बात भी सामने आती है। रूपसिंह चंदेल की कहानी 'हाशिम का' में अल्पसंख्यक समुदाय से एक अलगाव कर देने की स्थिति उभरी है।

अवधेश प्रीत की कहानी 'हमजमीन', 'मेरा मजहब मेरी शान', महेश दर्पण की कहानी 'जख्म', असगर वजाहत की कहानी 'मैं हिन्दू हूँ' और 'जख्म' और 'मुश्किल काम' , रमेश उपाध्याय की कहानी 'रात अब भी उतनी ही काली है', महुआ माजी का उपन्यास 'मैं बोरिशाइल्ला', मोहम्मद आरिफ का उपन्यास 'उपयात्रा', राही मासूम रज़ा का 'आधा गाँव', भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस', कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान', पंकज सुबीर का उपन्यास 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज़ था' आदि को विश्लेषण किया

गया है। अनिल यादव की कहानी 'दंगा भेजियो मौला!', राकेश तिवारी की कहानी 'कीच', आकांक्षा पारे काशिव की कहानी 'बहत्तर धड़कने तिहत्तर अरमान', संजय कुन्दन की कहानी 'विजेता आ रहे हैं', सूर्यनाथ सिंह की कहानी 'थूनी थामो', आबिद सुरती की कहानी 'अधर्म युद्ध', राकेश तिवारी का उपन्यास 'फसक' आदि को लिया गया है।

असगर वजाहत की कहानी 'शाह आलम कैम्प की रूहें' धार्मिक पहचान, असंवेदनशीलता, बाजारवाद और सत्ता के गठबंधन की बात को स्पष्ट करती है। क्योंकि शाह आलम कैम्प अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हो गया था। नवउदारवाद बहुसंख्यक और सत्ता के साथ संचालित होता है, इसमें साम्प्रदायिकता अल्पसंख्यकों को अपना शिकार बनाती है। अखिलेश की कहानी 'अंधेरा' नवउदारवाद और साम्प्रदायिकता को रेखांकित करती है। आज समाज में ब्लैक एण्ड व्हाइट टीवी से कलर टीवी, दूरदर्शन से केबल कनेक्शन और साईकिल की सवारी से मोटरसाइकिल, कार वगैरह का इस्तेमाल मध्यम वर्ग में दिख रहा है। अन्तरदेशीय पत्र, पोस्टकार्ड, लैंडलाईन फोन की जगह, इन्टरनेट वाला स्मार्टफोन, जिसमें वाट्सऐप, इंस्टाग्राम आदि हैं। इस दौर में बहुत-सी वस्तुएं बाजारों में आईं हैं और एक व्यक्ति के सोचने, समझने, कार्य करने की शैली में परिवर्तन हुआ है।

कथा-साहित्य के माध्यम से ज्ञात होता है कि किस तरह साम्प्रदायिक शक्तियां, पूंजीवाद, राष्ट्रवाद, धर्म के नाम पर राजनीति करती हैं और सत्ता पर अपना वर्चस्व स्थापित करना उनका मुख्य उद्देश्य होता है। समाज में संवेदनहीनता, विवेकहीनता एवं तर्कहीनता का स्तर दिन-प्रतिदिन तेज़ी से बढ़ रहा है। साम्प्रदायिक शक्तियां सम्प्रदायों के बीच आपसी संवाद को रोकना चाहती हैं, जिससे उनके बीच नकारात्मकता बढ़कर साम्प्रदायिकता के रूप में सामने आती है।